आईसीडब्ल्यूए समाचार पत्रक

अंक 19

अक्टूबर-दिसम्बर 2019

'सिक्ख हेरिटेज ऑफ नेपाल' पर प्रस्तुति और पुस्तक का विमोचन सप्रू हाउस 17 अक्टूबर, 2019

गुरू नानक देव जी की 550वीं जयंती को मनाने के लिए आईसीडब्ल्यूए तथा बी.पी. कोईराला इंडिया-नेपाल फाउंडेशन द्वारा संयुक्त रूप से एक प्रस्तुतिकरण का आयोजन दिनांक 17 अक्टूबर 2019 को किया गया तथा इस अवसर पर एक पुस्तक ''सिख हेरिटेज ऑफ नेपाल'' का विमोचन भी किया गया। इस समारोह के विशिष्ट अतिथि आवास एवं शहरी कार्य, नागरिक उड्डयन मंत्रालय और वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय में राज्यमंत्री श्री हरदीप सिंह पुरी थे। समारोह की अध्यक्षता राजदूत टीसीए राघवन, महानिदेशक आईसीडब्ल्यूए ने की। इस अवसर पर दो प्रमुख वक्ता थे राजदूत मंजीत सिंह पुरी, नेपाल में भारत के राजदूत तथा राजदूत निलांबर आचार्य, भारत में नेपाल के राजदूत। कार्यक्रम में नेपाल की समृद्ध सिख विरासत पर ध्यान केंद्रित करने पर जोर दिया गया। भारत-नेपाल संबंधों को मजबूत करने में सिख समुदाय ने विभिन्न क्षेत्रों में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है, दुर्भाग्य से उसे भुलाया, खोया और विलुप्त किया जा रहा है। वक्ताओं ने कहा कि सिक्ख जुड़ाव के प्रिज्म के माध्यम से यह पुस्तक भारत और नेपाल के बीच एक उत्कृष्ट बंधन को फिर से परिभाषित करने जैसा है।

आईसीडब्ल्यूए की उपलब्धियाँ

- 'पूर्वोत्तर क्षेत्र की सुरक्षा के बाहरी आयाम' विषय पर आईसीडब्ल्यूए-एस्कॉन राष्ट्रीय सम्मेलन
- आवास एवं शहरी कार्य मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार); नागरिक उड्डयन मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार); तथा वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री हरदीप सिंह पुरी द्वारा पुस्तक की प्रस्तुति और विमोचन
- चाइनीज पीपुल्स इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन अफेयर्स (सीपीआईएफए) के साथ छठी आईसीडब्ल्यूए द्विपक्षीय वार्ता, सप्रू हाउस
- रूस अंतर्राष्ट्रीय मामलों की परिषद (आरआईएसी), मास्को के साथ तीसरा रूस-भारत अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन
- चौथा भारत-चीन थिंक टैंक फोरम (चौथा आईसीटीटीएफ), बीजिंग
- 'फिलिस्तीनी लोगों के साथ अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता दिवस' मनाने के लिए समारोह
- आईसीडब्ल्यूए के पूर्व महासचिव डॉ. ए. अप्पोदाराई के जीवन और कार्यों का स्मरण

'पूर्वोत्तर क्षेत्र की सुरक्षा के बाहरी आयाम' विषय पर आईसीडब्ल्यूए-एस्कॉन राष्ट्रीय सम्मेलन, 10-11 अक्टूबर 2019, सप्रू हाउस

एशियन कंफ्लुएंस के सहयोग से भारतीय विश्व मामलों की परिषद, शिलॉन्ग ने 10-11 अक्टूबर, 2019 को सप्रू हाउस में 'पूर्वोत्तर क्षेत्र की सुरक्षा के बाहरी आयाम' विषय पर डेढ़ दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। भारत सरकार के पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय के सचिव डॉ. इंद्रजीत सिंह द्वारा उद्घाटन भाषण दिया गया। सम्मेलन में पूर्वोत्तर के सभी आठ राज्यों के 22 सहित कुल 35 प्रतिभागी थे। इनमें प्रशासन, सशस्त्र बल, शिक्षाविद, मीडिया और नागरिक समाज के प्रतिनिधि शामिल थे। सम्मेलन ने चार सत्रों के तहत व्यापक सुरक्षा आयामों पर चर्चा की, जो हैं; नीति अवलोकन: शासन, पूर्वोत्तर की सुरक्षा का बाहरी आयाम: भाग एक [चीन], पूर्वोत्तर की सुरक्षा का बाहरी आयाम: भाग एक [बांग्लादेश और म्यांमार], पॉलिसी आउटरीच: उभरती धारणाएं और सार्वजनिक कथनों में पहचान की राजनीति। विभिन्न सत्रों के दौरान इस बात पर जोर दिया गया कि कौशल विकास, उद्यमशीलता, पड़ोसियों के साथ आर्थिक संबंधों को मजबूत करने को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया जाए; जिसमें "एक्ट ईस्ट" नीति एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इसने पूर्वोत्तर में शासन के मुद्दे पर भी चर्चा की, कि सुरक्षा के बड़े मुद्दे का समाधान करने के लिए कनेक्टिविटी और व्यापार जैसे विकास एजेंडा को इसमें किस प्रकार शामिल करने की आवश्यकता है। पूर्वोत्तर क्षेत्र में सुरक्षा पर चीन का प्रभाव और अतीत में तथा इसकी वर्तमान विकासात्मक परियोजनाओं के लिए विद्रोही समूहों को चीन का समर्थन, इस क्षेत्र पर असर डालता है, जिस पर भी चर्चा की गई। उन आंतरिक कारकों पर भी चर्चा हुई, जिनका उत्तर पूर्व की सुरक्षा पर प्रभाव पड़ता है।

आईसीडब्ल्यूए-इंस्टीट्यूट फॉर पॉलिटिकल एंड इंटरनेशनल स्टडीज (आईपीआईएस) संवाद-आईसीडब्ल्यूए के प्रतिनिधिमंडल का आईपीआईएस, तेहरान, का दौरा, 13 अक्टूबर, 2019

राजदूत डॉ. टी.सी.ए. राघवन, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए के नेतृत्व में तीन सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल, जिसमें राजदूत राकेश सूद और दीपिका सारस्वत, रिसर्च फेलो शामिल हैं, ने 13 अक्टूबर 2019 को इंस्टीट्यूट फॉर पॉलिटिकल इंटरनेशनल स्टडीज, तेहरान का दौरा किया और दोनों देशों के समुद्री दृष्टिकोण पर बातचीत की। ईरान में भारतीय राजदूत गद्दाम धर्मेंद्र भी उपस्थित थे। ईरान की ओर से, डॉ. सईद खातिबजादेह, उपाध्यक्ष आईपीआईएस और इस्लामिक आजाद यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर काहान बरजेगर ने इस बातचीत में हिस्सा लिया। डॉ. राघवन ने प्रशांत क्षेत्र के साथ भारत के ऐतिहासिक संबंधों का उल्लेख किया, विशेष रूप से 1920 के दशक में भारतीय कवि रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा जापान और चीन में की गई यात्रा के बारे में और साथ ही कालिदास नाग, एक इतिहासकार, जो टैगोर के साथ थे, के बारे में जिन्होने इस क्षेत्र के साथ भारत के सांस्कृतिक संबंधों का दस्तावेजीकरण किया। यह उल्लेख किया गया था कि दक्षिण-पूर्व एशिया भारतीय और प्रशांत महासागर के बीच का सेतु है और एक समावेशी और खुले क्षेत्र के रूप में भारत-प्रशांत की अवधारणा भी है। कैप्टन आफताब अहमद खान ने इस बात पर भी जोर दिया कि 21वीं सदी में, सागर भारत के वैश्विक पुनरुत्थान में एक महत्वपूर्ण प्रवर्तक होगा। राजदूत सूद ने तर्क दिया कि शीत युद्ध के बाद के युग में, जब दुनिया के क्षेत्रीय विभाजन का पश्चिमी दोहरा वैचारिक ढांचा अप्रासंगिक हो गया था, तब भारत एक व्यापक संदर्भ में, एक समुद्री आयाम की परिकल्पना करने में सक्षम था। कई सभ्यताओं के बीच शीत-युद्ध की सोच के विपरीत, एशियाई महाद्वीप के भविष्य के लिए भारत के दृष्टिकोण को एशिया के बहु-सह-अस्तित्व के इतिहास द्वारा सूचित किया गया।

प्रो. बरजेगर ने उल्लेख किया कि ईरान का होर्मुज पीस एंडेवर का प्रस्ताव महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक परिवर्तनों का अनुसरण करता है, जैसे कि असममितिक युद्धों के कारण क्षेत्रीय सुरक्षा का क्षेत्रीयकरण और विदेशी हस्तक्षेपों की विफलता, जैसा कि यमन में हुए अनुभव में देखा गया। होप पहल सुरक्षित नौपरिवहन, आर्थिक संपर्क सुनिश्चित करने और आतंकवाद से लड़ने के लिए एक क्षेत्रीय तंत्र की तलाश करता है।

प्रो. आरोग्यस्वामी जे. पॉलराज द्वारा व्याख्यान सह चर्चा, सप्रू हाउस, 21 अक्टूबर, 2019

21 अक्टूबर 2019 को, प्रो. आरोग्यस्वामी जे पॉलराज, एमेरिटस प्रोफेसर, स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी और मोइमो (मल्टीपल इनपुट मल्टीपल आउटपुट) वायरलेस टेक्नोलॉजी के आविष्कारक और पायनियर ने श्चाइनीज एडवान्सेस इन टेक्नॉलॉजीश विषय पर क्लोस्ड डोर व्याख्यान दिया। राजदूत भास्कर बालकृष्णन, साइंस डिप्लोमेसी फेलो, विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली (आरआईएस), नई दिल्ली ने व्याख्यान की अध्यक्षता की। चीन में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के ऐतिहासिक और संस्थागत विकास पर प्रकाश डालते हुए प्रो. आरोग्यस्वामी ने तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में, क्वांटम कंप्यूटिंग, क्वांटम रडार और क्वांटम क्रिप्टोलॉजी जैसे अत्याधुनिक क्षेत्रों में चीनी तकनीकी उन्नति का मूल्यांकन किया।

भारत-जर्मनी संवाद, सप्रू हाउस, 01 नवंबर, 2019

पहली भारत-जर्मनी सामरिक वार्ता संयुक्त रूप से भारतीय विश्व मामलों की परिषद (आईसीडब्ल्यूए), विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली (आरआईएस), जर्मन अंतर्राष्ट्रीय और सुरक्षा मामलों के संस्थान (एसडब्ल्यूपी) और जर्मन ग्लोबल एंड एरिया स्टडीज (जीआईजीए), के बीच 1 नवंबर 2019 को सप्रू हाउस, नई दिल्ली में आयोजित की गई। सैद्धांतिक रूप से, भारत-जर्मनी द्विपक्षीय संबंधों से संबंधित राजनीतिक, रणनीतिक और आर्थिक मुद्दों पर चर्चा की गई। क्षेत्रीय और वैश्विक परिदृश्यों और दुनिया के विभिन्न हिस्सों में राजनीतिक संकटों का भी विश्लेषण किया गया।

चाइनीज पीपुल्स इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन अफेयर्स (सीपीआईएफए) के साथ छठी आईसीडब्ल्यूए द्विपक्षीय वार्ता, सप्रू हाउस, 06-08 नवंबर, 2019

भारतीय विश्व मामलों की परिषद (आईसीडब्ल्यूए) ने 7 नवंबर 2019 को नई दिल्ली के सप्रू हाउस में चाइनीज पीपुल्स इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन अफेयर्स (सीपीआईएफए) के साथ एक दिवसीय द्विपक्षीय वार्ता की मेजबानी की। दोनों संस्थान 2005 से समझौता करार के अधीन भागीदार हैं और यह संवाद इस श्रृंखला में छठा था। पाँचवां संवाद सितंबर 2018 में बीजिंग में आयोजित किया गया था।

आईसीडब्ल्यूए के महानिदेशक राजदूत डॉ. टी.सी.ए. राघवन ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। भारतीय प्रतिनिधिमंडल में राजदूत एच. के. सिंह, राजदूत अनिल वाधवा, राजदूत गौतम बंबावाले, कमोडोर आरएस वासन भारतीय नौसेना (सेवानिवृत्त), प्रो. मधु भल्ला, संपादक, इंडिया क्वार्टरली और साथ ही भारत के थिंक-टैंक और अकादमिक संस्थानों के विशेषज्ञ भी शामिल थे।

सप्रू हाउस में छठे संवाद में भाग लेने के लिए राजदूत यांग यानी ने चीन के आठ सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। चीनी प्रतिनिधिमंडल में राजदूत ऑउ बाकियान, उपाध्यक्ष, सीपीआईएफए, राजदूत वांग चुंगुई और प्रो. ये हैलिन, चाइनीज एकेडमी ऑफ सोशल साइंसेज, शामिल थे। एक दिवसीय अभ्यास में दोनों पक्षों के द्विपक्षीय और वैश्विक हितों से संबंधित कई महत्वपूर्ण मुद्दों को समझने और चर्चा करने की योजना बनाई गई।

संवाद में तीन मुख्य विषयों पर विचार-विमर्श किया गया: (क) वुहान से चेन्नई: राजनयिक संबंधों की 70वीं वर्षगांठ मनाने के लिए; (ख) ग्लोबल इकोनॉमिक आउटलुक: भारत और चीन के परिप्रेक्ष्य तथा (ग) सांस्कृतिक और लोगों से लोगों के आदान-प्रदान का महत्व।

दोनों पक्षों ने दोनों संस्थानों के बीच और साथ ही थिंक-टैंक अकादमिक और रणनीतिक समुदाय के सदस्यों के बीच नियमित रूप से बातचीत करने की आवश्यकता पर जोर दिया। यह परिचर्चा बहुत ही कारगर अभ्यास साबित हुई। दोनों पक्षों ने माना कि नियमित रूप से बातचीत की सह-मेजबानी, आपसी समझ को बढ़ावा देगी और मतभेदों को कम करेगी।

वियतनाम से विजिटिंग प्रतिनिधिमंडल के साथ बातचीत
सप्रू हाउस, 14 नवंबर, 2019.

आईसीडब्ल्यूए ने 14 नवंबर, 2019 को वियतनाम के स्ट्रैटेजिक स्टडीज डिवीजन, इंस्टीट्यूट ऑफ मिलिट्री स्ट्रैटेजी, मिनिस्ट्री ऑफ नेशनल डिफेंस, सोशलिस्ट रिपब्लिक के निदेशक कर्नल ले विएत क्यूंग के नेतृत्व में तीन सदस्यीय वियतनामी प्रतिनिधिमंडल की मेजबानी की। आईसीडब्ल्यूए के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व श्रीमती नूतन कपूर महावर, संयुक्त सचिव, आईसीडब्ल्यूए, डॉ. निवेदिता रे, निदेशक (अनुसंधान) और अन्य शोध अध्येताओं ने किया।

श्रीमती नूतन कपूर महावर ने आईसीडब्ल्यूए के इतिहास और अनुसंधान के केन्द्रबिन्दू पर प्रकाश डालते हुए आईसीडब्ल्यूए प्रतिनिधि मंडल का परिचय वियतनामी पक्ष से कराया। इसके बाद स्ट्रैटेजिक स्टडीज डिवीजन, इंस्टीट्यूट ऑफ मिलिट्री स्ट्रैटेजी, वियतनाम के निदेशक कर्नल ले विएत क्यूंग ने प्रारम्भिक टिप्पणियाँ दीं।

आईसीडब्ल्यूए के दो अनुसंधान अध्येता (रिसर्च फेलो) डॉ. विवेक मिश्रा और डॉ. स्तुति बनर्जी द्वारा संक्षिप्त प्रस्तुतियां दी गईं। इसके उपरांत दोनों प्रतिनिधियों के बीच एक खुली बातचीत हुई, जहां दोनों पक्षों ने भारत-प्रशांत के अपने संबंधित और आम दृष्टिकोणों पर अपने विचारों का आदान-प्रदान किया।

सत्तारूढ़ बाथ पार्टी, सीरिया के उच्च शिक्षा ब्यूरो प्रमुख डॉ. मोहसेन बिलाल के साथ इंटरएक्टिव सत्र, सप्रू हाउस, 15 नवंबर, 2019.

दिनाँक 15 नवंबर को, सत्तारूढ़ बाथ पार्टी, सीरिया के उच्च शिक्षा ब्यूरो प्रमुख डॉ. मोहसेन बिलाल ने 'द डायनेमिक्स 'ऑफ बाइलॅटरल एंगेज्मेंट्स बिट्वीन इंडिया एंड सिरिया' पर एक इंटरैक्टिव सत्र हेतु आईसीडब्ल्यूए का दौरा किया। राजदूत गौतम मुखोपाध्याय ने सत्र की अध्यक्षता की। राजदूत मोहसेन बिलाल ने उल्लेख किया कि वर्ष 2011 में सीरिया में मानवता के दुश्मनों द्वारा बमबारी की गई थी, तथाकथित इस्लामवादी द्वारा, जो वास्तव में यूरोप, लैटिन अमेरिका के कट्टरपंथी थे। उन्होंने तर्क दिया कि सीरिया एक बहु-जातीय और बहु-धार्मिक देश है और सीरियाई युद्ध के दौरान आतंकवाद के विरुद्ध, न केवल गिने चुने बल्कि सभी वर्ग के लोग सरकार के समर्थन में एकजुट हुए हैं। उन्होंने श्रोताओं को बताया कि सीरिया में मौजूदा बहस इस बात को लेकर है कि हमारे देश को विदेशी कब्जे अर्थात डायर-एज-जूर से अमेरिकी सैन्य की उपस्थिति और उत्तरी सीरिया में तुर्की सैन्य उपस्थिति से कैसे मुक्त किया जाए। उन्होंने यह भी उल्लेख किया की सीरिया की अनैतिकता की अवधि 2011 से 2015 के दौरान भारत ने कभी भी इसे निराश नहीं किया और हमेशा ही विदेशी हस्तक्षेपों के विरुद्ध सीरियाई पक्ष का अंतर्राष्ट्रीय रूप से समर्थन किया। सीरिया पूर्व की ओर आशावान है कि वह भारत से सहिष्णुता और सह-अस्तित्व के मूल्यों को सीख सके।

रूस अंतर्राष्ट्रीय मामलों की परिषद (आरआईएसी), मास्को के साथ तीसरा रूस-भारत अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, 19-20 नवंबर, 2019.

दिनाँक 19-20 नवंबर, 2019 को विश्व मामलों की भारतीय परिषद (आईसीडब्ल्यूए) रूसी अंतर्राष्ट्रीय मामलों की परिषद (आरआईएसी) ने तीसरा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन ष्रूस-भारत संबंधों की रणनीतिक दृष्टि, एक बदलते विश्व व्यवस्था में रणनीतिक दृष्टिकोण" का आयोजन किया। इसके बाद 2017 और 2018 में क्रमशः 1 और 2 सम्मेलन हुए।

चर्चा इस तथ्य के इर्द-गिर्द घूमती है कि यह एक गतिशील संक्रमण है जो विश्व व्यवस्था में हो रहा है।

एकल-ध्रुवीता और बहु-ध्रुवीता के बीच एक झगड़ा है। इस परिवर्तन में, दो बड़ी शक्तियाँ, भारत और रूस, विश्व व्यवस्था के निर्माण में सहायता कर रही हैं और विश्व शासन को बहाल कर रही हैं। हालाँकि, उनके योगदान के परिणाम संतोषजनक नहीं हैं, पर कुछ सफलता की कहानियाँ भी हैं। दोनों देश अधिक क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर योगदान दे सकते हैं। भारत और रूस दोनों ही एससीओ जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रीय मंचों को साझा करते हैं, जिनमें से कुछ चुनिंदा हैं जो बहुपक्षीय विश्व व्यवस्था के प्रचार के लिए मुख्य कारक हैं। वक्ताओं ने यह भी विचार साझा किया कि दुनिया अब अधिक सुरक्षित या स्थिर नहीं है। पूरी दुनिया में स्थितियाँ अप्रत्याशित हो रही हैं। भारत और रूस भी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। सरकारों की मदद करने में, क्षितिज से परे और बाहर की सोच के माध्यम से समाधान खोजने में आईसीडब्ल्यूए और आरआईएसी की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है।

चौथा भारत-चीन थिंक टैंक फोरम, बीजिंग, 26 नवंबर-2 दिसंबर, 2019.

डॉ. टी.सी.ए. राघवन, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए ने बीजिंग में 28-29 नवंबर, 2019 को आयोजित चौथे भारत-चीन थिंक-टैंक फोरम (आईसीटीटीएफ) में भाग लेने के लिए 15-सदस्यीय भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। फोरम को संयुक्त रूप से आईसीडब्ल्यूए और चाइनीज एकेडमी ऑफ सोशल साइंसेज (सीएएसएस) द्वारा आयोजित किया गया। भारतीय प्रतिनिधिमंडल में राजदूत अशोक के. कांथा, निदेशक, चीनी अध्ययन संस्थान (आईसीएस), श्री सौमेन बागची, डीडीजी, आईसीडब्ल्यूए, श्री दिलीप चेनॉय, महासचिव, भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग महासंघ (फिक्की), प्रो. मधु भल्ला, संपादक, इंडिया क्वाटर्ली और साथ ही भारत के थिंक-टैंक तथा शैक्षणिक संस्थानों के विशेषज्ञ शामिल थे। चीनी प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व सीएएसएस के अध्यक्ष प्रो जी फुजहन ने किया।

चौथे आईसीटीटीएफ के उद्घाटन सत्र का संबोधन भारतीय पक्ष से डॉ. टी.सी.ए. राघवन, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए और डॉ. एक्विनो विमल, डीसीएम, भारतीय दूतावास, बीजिंग तथा चीन पक्ष से प्रो. जी फुजहान, अध्यक्ष सीएएसएस एवं चीन के विदेश मामलों के उप मंत्री राजदूत लुओ झाओहुई द्वारा किया गया।

चौथे फोरम का विषय 'एशियाई शताब्दी में चीन-भारत संबंध' था। चौथे फोरम में विशेष रूप से द्विपक्षीय और आपसी हित के मुद्दों पर विचार-विमर्श किया, (क) चीन और भारत के बीच निकटता विकास साझेदारी निर्माण; (ख) चीन और भारत में विकास रणनीतियाँ और अनुभव; तथा (ग) चीनी और भारतीय सभ्यता के बीच संचार और पारस्परिक शिक्षण। फोरम का प्रमुख जोर दोनों देशों में विकास की बातचीत को समझने के साथ-साथ दोनों देशों के बीच सहयोग के नए रास्ते तलाशना था। दोनों पक्षों ने इस बात पर प्रकाश डाला कि चेन्नई में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच दूसरे अनौपचारिक शिखर सम्मेलन ने दोनों एशियाई दिग्गजों के बीच संबंधों को और मजबूत किया।

बीजिंग में थिंक-टैंक फोरम के पश्चात, भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने झेजियांग अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन विश्वविद्यालय, हांग्जो के साथ-साथ फुदैन विश्वविद्यालय का भी दौरा किया और भारत और चीन के बीच आपसी हितों के मुद्दों पर विचारों का आदान-प्रदान किया।

राजदूत गल्मा एम. बोरू, निदेशक, विदेश विज्ञान अकादमी, विदेश मंत्रालय, केन्या के साथ परस्पर बातचीत, सप्रू हाउस, 28 नवंबर, 2019.

राजदूत गल्मा एम. बोरू, निदेशक-विदेश सेवा अकादमी, विदेश मंत्रालय (प्रमुख) के नेतृत्व में पाँच सदस्यीय केन्याई प्रतिनिधि मंडल ने 28 नवंबर, 2019 को एक क्लोस्ड डोर चर्चा के लिए भारतीय विश्व मामलों की परिषद का दौरा किया। श्रीमती नूतन कपूर महावर, संयुक्त सचिव, ने आईसीडब्ल्यूए की ओर से प्रतिनिधिमंडल का स्वागत किया और केन्या और भारत के बीच ऐतिहासिक संबंधों के बारे में बात की और बताया कि किस तरह से उच्च स्तरीय यात्राओं के माध्यम से एक मजबूत और बहुमुखी साझेदारी में व्यापार, निवेश विकसित हुआ है और लोगों से लोगों का व्यापक संपर्क बढ़ा है। इसके बाद आईसीडब्ल्यूए की पृष्ठभूमि, इसकी वर्तमान संरचना, कार्य क्षेत्रों और विदेश मंत्रालय, भारत सरकार के साथ संबंधों पर एक विस्तृत प्रस्तुति दी गई।

डॉ. गणेश विघ्नराजा, कार्यकारी निदेशक, लक्ष्मण कादिरगामार संस्थान (एलकेआई), कोलंबो, श्रीलंका द्वारा व्याख्यान, सप्रू हाउस, 3 दिसंबर, 2019.

सप्रू हाउस में 3 दिसंबर, 2019 को डॉ. गणेशन विघ्नराजा, कार्यकारी निदेशक, लक्ष्मण कादिरगामार संस्थान (एलकेआई), कोलंबो, श्रीलंका द्वारा 'द आउटलुक फॉर इंडिया श्रीलंका रिलेशन्स आफ्टर द प्रेसीडेंशियल इलेक्शन्स इन श्रीलंका' पर व्याख्यान दिया गया। इस वार्ता की अध्यक्षता श्रीलंका में पूर्व भारतीय राजदूत तथा चीनी अध्ययन संस्थान के निदेशक राजदूत अशोक के. कांता ने की। डॉ. टीसीए राघवन, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए द्वारा स्वागत उद्‌बोधन दिया गया। डॉ. गणेशन विघ्नराजा ने बताया कि नवंबर 2019 में श्रीलंका के राष्ट्रपति गोटाबैया राजपक्षे द्वारा भारत की उच्च-स्तरीय यात्रा, निकटतम समुद्री पड़ोसियों के रूप में भारत-श्रीलंका रणनीतिक संबंधों के महत्व को रेखांकित करती है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति गोटाबैया राजपक्षे के नेतृत्व वाली श्रीलंका की नई सरकार की चार प्रमुख प्राथमिकताएँ हैं; राजनीतिक स्थिरता और सुरक्षा, आर्थिक विकास, राज्य संस्थानों में सुधार और गुटनिरपेक्ष विदेश नीति। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि एक नए और अधिक चुनौतीपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय युग में और विकास के संदर्भ में भारत-श्रीलंका संबंधों का पुनः स्थापन हो रहा है। दोनों देशों के बीच ताकत और तालमेल पर जोर देते हुए, वक्ता ने दोनों पक्षों के कुछ संवेदनशील और जटिल मुद्दों से निपटने की आवश्यकता पर जोर दिया। वक्ता ने श्रीलंका की मानवीय आपदा राहत और संघर्ष-उपरांत पुनर्निर्माण में भारत की भूमिका की सराहना की।

'फिलिस्तीनी लोगों के साथ अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता दिवस' मनाने के लिए समारोह, सप्रू हाउस, 4 दिसंबर, 2019.

आईसीडब्ल्यूए ने 4 दिसंबर, 2019 को 'फिलिस्तीनी लोगों के साथ अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता दिवस' का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में विद्वानों और पत्रकारों के अलावा कई पूर्व और सेवारत राजनयिकों ने भाग लिया। मुख्य उद्बोधन राजदूत संजय सिंह, पूर्व सचिव पूर्वी क्षेत्र, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिया गया। इस अवसर पर उद्बोधन देने वाले अन्य विशिष्ट वक्ताओं में नई दिल्ली में अरब लीग के राजदूत महामहिम श्रीमती इलैया घननाम, महामहिम श्री अदनान अबू अलहाइजा, फिलिस्तीन के राजदूत, सऊदी अरब के राजदूत, डॉ. सऊद मोहम्मद अलसती और श्री बर्केल, राष्ट्रीय सूचना अधिकारी, यूएनआईसी प्रतिनिधि शामिल थे। स्वागत उद्बोधन आईसीडब्ल्यूए के महानिदेशक डॉ. टीसीए राघवन द्वारा दिया गया।

ओएसडब्ल्यू (पोलिश थिंक-टैंक) प्रतिनिधिमंडल के साथ परस्पर बातचीत, सप्रू हाउस, 4 दिसंबर, 2019.

वारसॉ, पोलैंड के ओरोडेक स्टूडियो व्स्कोड्निक [पूर्वी अध्ययन केंद्र] से छह सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 4 दिसंबर 2019 को सप्रू हाउस का दौरा किया। पोलिश प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व निदेशक डॉ. एडम एबरहार्ट ने किया। यह चर्चा रूस-चीन सांठगांठ के इर्द-गिर्द केन्द्रित रही, कि यह भारतीय विदेश नीति मैट्रिक्स को कैसे प्रभावित करता है और पोलैंड भारत-रूस संबंधों एवं रूस के साथ अपने संबंधों के विकास को कैसे देखता है। नाटो पर ध्यान देने के साथ बदलती ट्रान्स-अटलांटिक साझेदारी पर भी चर्चा हुई, जिसमें पोलिश रक्षा रणनीति पर जोर दिया गया। विदेश मंत्री की हालिया विदेश यात्रा की पृष्ठभूमि में भारत-पोलैंड संबंधों पर भी इस अवसर पर चर्चा हुई।

आईसीडब्ल्यूए के पूर्व महासचिव डॉ. ए. अप्पोदाराई के जीवन और कार्यों का स्मरण, सप्रू हाउस, 10 दिसंबर, 2019.

दिनांक 10 दिसंबर 2019 को सप्रू हाउस में आईसीडब्ल्यूए के पूर्व महासचिव डॉ. ए. अप्पादोराई के जीवन और कृत्यों को स्मरण करते हुए संगोष्ठी आयोजित की गई। डॉ. अप्पादोराई वर्ष 1944 में आईसीडब्ल्यूए के पहले पूर्णकालिक सचिव और बाद में आईसीडब्ल्यूए के महासचिव बने, जिस पद पर वे वर्ष 1955 तक बने रहे। वर्ष 1955 में, वे इंडियन स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज (आईएसआईएस) के संस्थापक निदेशक बने। वे 1967 में संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) के सदस्य बने। डॉ. टी.सी.ए. राघवन, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए ने इस आयोजन की अध्यक्षता की।

अपने स्वागत उद्बोधन में डॉ. राघवन ने कहा कि इस आयोजन का उद्देश्य आईसीडब्ल्यूए के प्रति डॉ. अप्पादोराई के योगदान को याद करना था। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और क्षेत्रीय अध्ययनों पर और भारत में अपने प्रारंभिक वर्षों में भारतीय विदेश नीति के विकास में डॉ. अप्पादोराई के महत्वपूर्ण योगदान के बारे में विस्तार से बताया।

प्रो. एस.डी. मुनि, प्रोफेसर एमेरिटस जेएनयू, प्रो. राजन हर्ष, संस्थापक और पूर्व कुलपति, इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय और डॉ राकेश बटब्याल, एसोसिएट प्रोफेसर, सेंटर फॉर मीडिया स्टडीज, स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज, जेएनयू, नई दिल्ली द्वारा डॉ. अप्पोरादाई की एक शिक्षक के रूप में और उनकी भूमिका को याद करते हुए कार्यक्रम में विशेष टिप्पणी दी गई।

इस अवसर पर आईसीडब्ल्यूए के तीन पूर्व निदेशक राजदूत सुधीर टी. देवरे, राजदूत राजीव भाटिया और राजदूत नलिन सूरी उपस्थित थे। डॉ. विवेक मिश्रा, रिसर्च फेलो, आईसीडब्ल्यूए ने ष्अंगदीपुरम अप्पोराई: लाइफ, वर्क स्कॉलरशिपष शीर्षक से एक पत्र प्रस्तुत किया।

आईसीडब्ल्यूए के इतिहास की घटनाओं की श्रृंखला में उनका चौथा आयोजन था।

हिंद महासागर वार्ता (आईओडी-6) का छठा संस्करण, शैक्षणिक, विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग (ईजीएमएएसटीसी) पर पहले हिंद महासागर रिम एसोसिएशन विशेषज्ञ समूह की बैठकऋ और 25वीं हिंद महासागर रिम शैक्षणिक समूह (आईओआरएजी) की बैठक, 12-13 सितंबर, 2019

विदेश मंत्रालय के सहयोग से आईसीडब्ल्यूए ने हिंद महासागर वार्ता (आईओडी-6) के छठे संस्करण का आयोजन, शैक्षणिक, विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग (ईजीएमएएसटीसी) पर पहले हिंद महासागर रिम एसोसिएशन विशेषज्ञ समूह की बैठक; तथा 25वीं हिंद महासागर रिम शैक्षणिक समूह (आईओआरएजी) की बैठक 12-13 दिसंबर 2019 को प्रवासी भारतीय केंद्र, नई दिल्ली में आयोजित की। 25वां आईओआरएजी और पहला ईजीएमएएसटीसी 12 दिसंबर 2019 को आयोजित हुआ, तथा 6वां आईओडी 13 दिसंबर 2019 को आयोजित किया गया। आईओआरएजी में, दक्षिण अफ्रीका ने भारत को अध्यक्षता सौंपी, जिसके बाद दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधिमंडल ने पिछली रिपोर्ट की पठन किया। इसके बाद विभिन्न सत्र हुए, जिसमें समुद्री कूड़े और मलबे, आईयूयू मत्स्य-ग्रहण और विलवणीकरण से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की गई।

पहले ईजीएमएएसटीसी ने एएसटीसी (अकादमिक, विज्ञान और प्रौद्योगिकी) पर कार्य समूह के लिए संदर्भ की शर्तों (टीओआर) पर चर्चा की और व्यापक सुझाव दिए। विशिष्ट निष्कर्षों में, "शैक्षणिक, विज्ञान और प्रौद्योगिकी" से कार्यकारी समूह का नाम बदलकर "विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार" करना शामिल था, जिसे सदस्यों द्वारा सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। दूसरे सत्र में सदस्यों के बीच ईजीएमएएसटीसी के लिए कार्य योजना पर चर्चा की गई। तीसरे सत्र में, मलेशिया के मैरीटाइम इंस्टीट्यूट (एमआईएमए) के मलेशियाई प्रतिनिधि ने समुद्री मामलों के लिए उत्कृष्टता केंद्र पर एक प्रस्तुति दी, जैसा कि जकार्ता कॉनकॉर्ड और आईओआरए कार्य योजना 2017-2021 के तहत सहमति व्यक्त की गई थी। आयोजन समाप्ति के क्रम में 25वें आईओआरएजी और पहले ईजीएमएएसटीसी की एक संयुक्त मान्य सत्र का आयोजन किया गया।

हिंद महासागर संवाद (आईओडी) में उद्घाटन सत्र शामिल था, इसके उपरांत तीन विषयों वाले विस्तृत सत्र शामिल थे। उद्घाटन सत्र में डॉ. टी.सी.ए. राघवन, महानिदेशक, भारतीय विश्व मामलों की परिषद, नई दिल्ली ने सम्मानित पैनल, प्रतिनिधियों, मेहमानों और सभी एकत्रित लोगों का गर्मजोशी से स्वागत किया। तीन विस्तृत सत्र के क्रमशः शीर्षक थे, 'इंडो-पैसिफिक: सीमलेस एंड कलेक्टिव'; "समुद्री कनेक्टिविटी और बुनियादी ढांचा"; और 'सागर में सार्वजनिक वस्तुओं का संवितरण'। तीन प्लेनरी विस्तृत सत्रों के बाद मंत्रिस्तरीय सत्र आयोजित किया गया, जो कि आईओडी-6 का मान्य सत्र भी था। इस अवसर पर विदेश मामलों के राज्य मंत्री वी. मुरलीधरन ने अपनी टिप्पणी दी और इसके खुलेपन, स्वतंत्रता, समावेश, नियमों पर आधारित वास्तुकला और सभी राष्ट्रों की समानता सहित भारत-प्रशांत अवधारणा की विशेषताओं पर प्रकाश डाला।

स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज, सिचुआन विश्वविद्यालय, चेंगदू की प्रो (सुश्री) किउ योंगहुई द्वारा "चीन में हिंदू धर्म" पर व्याख्यान, सप्रू हाउस, 19 दिसंबर, 2019.

प्रो (सुश्री) किउ योंगहुई ने 19 दिसंबर, 2019 को "चीन में हिंदू धर्म: विगत और वर्तमान" विषय पर एक व्याख्यान दिया। उन्होंने तर्क दिया कि हिंदू धर्म ने भारत से चार अलग-अलग प्राचीन मार्गों से चीन की यात्रा की। पहला पारंपरिक सिल्क मार्ग था। दूसरा हिमालय मार्ग, जो भारत-नेपाल-तिब्बत मार्ग था। तीसरा चाय और घोड़े का प्राचीन मार्ग है, जो असम और युन्नान के माध्यम से है। चौथा मैरीटाइम सिल्क मार्ग है, जो फुजियान के माध्यम से है। मार्ग वही हैं, जिनके माध्यम से बौद्ध धर्म ने चीन की यात्रा की। पहले दो मार्गों पर बड़ी संख्या में चीनी विद्वानों ने कार्य किया है। चेन्नई में हाल ही में संपन्न अनौपचारिक शिखर सम्मेलन के बाद, फुजियान के माध्यम से मार्ग पर एक अतिरिक्त ध्यान केंद्रित किया गया है।

उनके अनुसार, कुवांगझाऊ के भारत के साथ 1000 साल के संबंध बहुत विस्तृत हैं। यह दर्ज किया गया है कि सांग (960-1279) और युआन (1279-1368) राजवंशों के दौरान, तमिलनाडु के तमिल व्यापारियों का एक समुदाय कुवांगझाऊ में रहता था। यह भी चर्चा की गई कि हिंदू देवताओं को फुजियान क्षेत्र के लोक धर्मों में रूपांतरित किया गया है। यह एक बहुत ही रोचक सांस्कृतिक घटना है जो स्वाभाविक रूप से स्थानीय विश्वास प्रणाली में एकीकृत होती है। कई हिंदू देवी-देवताओं को बौद्ध देवताओं के रूप में भी पूजा जाता है। एक अन्य प्रमुख खोज तियान्झू में नरसिंह और फुजियान में युंगचुन के यूंफेंग मंदिर की खोज है।

अपने निष्कर्ष में, उन्होंने तर्क दिया कि हिंदू देवी-देवताओं ने सिल्क मार्ग, या दक्षिणी सिल्क मार्ग, या प्राचीन चाय और घोड़ा मार्ग, हिमालय पर्वत मार्ग और मैरिटाइम सिल्क मार्ग क्षेत्र के साथ शांति के साथ और बिना संघर्ष के चीन में प्रवेश किया। दूसरी बात यह है कि फुजियान में नरसिंह की मूर्ति और मिट्टी के बर्तनों की खोज, युन्नान के बेनझू विश्वास और इसी तरह के अन्य उदाहरणों के माध्यम से इस तथ्य पर प्रकाश डाला गया है कि हिंदू देवी-देवताओं ने खुद को चीनी बौद्ध और लोक धर्मों के अनुकूल बना लिया है और अब उनका स्थायी अस्तित्व है। तीसरा, चीन में हिंदू धर्म ने बौद्ध धर्म को समृद्ध करने में मदद की है। इसने चीन में बौद्ध धर्म के प्रसार को आसान बनाने में मदद की है। चौथे, पूरे इतिहास में हिंदू पुजारियों और अनुवादकों ने बौद्ध के साथ मिलकर काम किया है और चीन की दीर्घकालिक समझ विकसित करने में मदद की है। गणित, खगोल विज्ञान, मूर्तिकला आदि जैसे अन्य पहलुओं पर भी हिंदू धर्म का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है।

आईसीडब्ल्यूए के आउटरीच कार्यक्रम

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मदुरै कामराज विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 29-31 अक्टूबर, 2019

भारत-प्रशांत के विचार को नेविगेट करने पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन: भारतीय और दक्षिण पूर्व एशियाई परिप्रेक्ष्य, का आयोजन राजनीति विज्ञान और लोक प्रशासन विभाग, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मदुरै कामराज विश्वविद्यालय, मदुरै द्वारा 29-31 अक्टूबर 2019 को किया गया। उद्घाटन संबोधन को भारतीय विश्व मामलों की परिषद (आईसीडब्ल्यूए) के महानिदेशक राजदूत डॉ. टीसीए राघवन द्वारा दिया गया। दिनांक 29 अक्टूबर 2019 को आईसीडब्ल्यूए और दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मदुरै कामराज विश्वविद्यालय के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। संगोष्ठी में परिषद के रिसर्च फेलो डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्यजी और डॉ. प्रज्ञा पांडे ने शोधपत्र प्रस्तुत किए।

आर.सी.ए. गर्ल्स (पीजी) कॉलेज, मथुरा, द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, 15-16 नवंबर, 2019

'कश्मीर: भारत और पाकिस्तान के बीच संवाद की व्यवहार्यता का पुन: प्रयोज्य समाधान' पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 15-16 नवंबर, 2019 को आर.सी.ए. गर्ल्स (पीजी) कॉलेज, मथुरा में किया गया। सम्मेलन को आंशिक रूप से आईसीडब्ल्यूए द्वारा वित्त पोषित किया गया। राष्ट्रीय सम्मेलन में भारत पाकिस्तान संबंधों की विभिन्न गतिशीलता पर चर्चा की गई। डॉ. आशीष शुक्ला, रिसर्च फेलो, आईसीडब्ल्यूए, ने सम्मेलन में हिस्सा लिया।

सेंट जॉन कॉलेज, आगरा द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन 07 दिसंबर, 2019

सेंट जॉन्स कॉलेज, आगरा द्वारा 'भारत और यूरोपीय संघ: रणनीतिक साझेदारी में नए क्षितिज की खोज' पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया था। सम्मेलन को विश्व मामलों की भारतीय परिषद, सप्रू हाउस, नई दिल्ली द्वारा अपने आउटरीच कार्यक्रम के तहत प्रायोजित किया गया। सम्मेलन में महाविद्यालय के छात्रों, शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों और नीति निर्माताओं ने भाग लिया। भारत-यूरोपीय संघ संबंधों के विभिन्न पहलुओं पर कई शोधपत्र भी प्रस्तुत किए गए, जैसे कि यूरोप में भू-राजनीतिक परिदृश्य, ब्रेक्सिट, आर्थिक और ऊर्जा सहयोग, सुरक्षा सहयोग, खाद्य सुरक्षा, अकादमिक आदान-प्रदान, अनुवाद आदि। डॉ. दीनोज उपाध्याय, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए, ने सम्मेलन में परिषद का प्रतिनिधित्व किया।

सेंटर फॉर स्टडीज इन इंटरनेशनल रिलेशंस एंड डेवलपमेंट (सीएसआईआरडी), कोलकाता द्वारा एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन, 11 दिसंबर, 2019

सेंटर फॉर स्टडीज इन इंटरनेशनल रिलेशंस एंड डेवलपमेंट (सीएसआईआरडी) और इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन पॉलिसी स्टडीज (आईएफपीएस), कोलकाता विश्वविद्यालय, विश्व मामलों की भारतीय परिषद (आईसीडब्ल्यूए) और आईवीएस ग्लोबल सर्विसेज के सहयोग से कोलकाता में एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन 11-12 दिसंबर 2019 को किया गया। सम्मेलन का शीर्षक था "पश्चिम एशिया 2020: ऑफ फॉल्टलीनेस एंड पोसिबल मेल्टडाउन"। सम्मेलन को आईसीडब्ल्यूए द्वारा आर्थिक रूप से समर्थन किया गया। डॉ. अतहर जफर, रिसर्च फेलो, आईसीडब्ल्यूए ने सम्मेलन में परिषद का प्रतिनिधित्व किया।

राजनीति विज्ञान विभाग, केरल विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, 11-13 दिसंबर, 2019

दिनाँक 11–13 दिसंबर 2019 को राजनीति विज्ञान विभाग, केरल विश्वविद्यालय ने 'भारत–प्रशांत की भू–राजनीति: धारणा, अवसर और चुनौतियाँ' विषय पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्रीकांत कोंडापल्ली ने मुख्य उद्बोधन दिया और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर शंकरी सुंदररमन ने समापन उद्बोधन दिया। सम्मेलन को आंशिक रूप से आईसीडब्ल्यूए द्वारा वित्त पोषित किया गया। डॉ. जोजिन वी. जॉन, रिसर्च फेलो, आईसीडब्ल्यूए ने सम्मेलन में परिषद का प्रतिनिधित्व किया और उद्घाटन सत्र में टिप्पणी प्रस्तुत की।

अर्थशास्त्र विभाग, जी.टी.एन. आर्ट्स कॉलेज (स्वायत्त), द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन, 12-13 दिसंबर, 2019

जीटीएन आर्ट्स कॉलेज ने 12–13 दिसंबर, 2019 को 'व्यापार के अवसर और ब्रिक्स देशों में चुनौतियाँ' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन को आंशिक रूप से आईसीडब्ल्यूए द्वारा वित्त पोषित किया गया। सम्मेलन की शुरुआत प्रो. पी. बालागुरूस्वामी, प्राचार्य, जी.टी.एन आर्ट्स कॉलेज द्वारा स्वागत भाषण के साथ हुई। सम्मेलन में दो दिनों में छह सत्रों का आयोजन किया गया और यह एक समापन सत्र के साथ समाप्त हुआ। डॉ. प्रियंका पंडित, रिसर्च फेलो, आईसीडब्ल्यूए विशिष्ट अतिथि थीं और उद्घाटन सत्र में मुख्य उद्बोधन दिया। सम्मेलन में तमिलनाडु के अन्य कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के छात्रों और प्रोफेसरों की भी भागीदारी थी। सम्मेलन के संबंध में समाचार को स्थानीय और राष्ट्रीय दैनिकों में भी स्थान दिया गया।

यूजीसी-मानव संसाधन विकास केंद्र, कुमाऊं विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 13-14 दिसंबर, 2019

यूजीसी-मानव संसाधन विकास केंद्र, कुमाऊं विश्वविद्यालय द्वारा भारतीय विश्व मामलों की परिषद, नई दिल्ली के सहयोग से 13-14 दिसंबर, 2019 को 'इंटर-डिपेंडेंस ऑफ नेशन्स इन शेपिंग द ग्लोबल फ्यूचर: इश्यूज, चौलेंजेज एंड वे फॉरवर्ड' पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

डॉ. एफ. आर. सिद्दीकी, रिसर्च फेलो ने आईसीडब्ल्यूए का प्रतिनिधित्व किया और उन्होंने एक पत्र भी प्रस्तुत किया। इसमें उत्तरी और मध्य भारत के अधिकांश राज्यों के राजनयिकों, शिक्षाविदों और शोधकर्ताओं ने भाग लिया।

ICWA Analyses (October - December 2019)

दृष्टिकोण		
1	डॉ. फज्जूर रहमान सिद्दीकी	सूडान के राजनीति क्षेत्र में शांति प्रवेशक (10 अक्टूबर)
2	डॉ. गुंजन सिंह	ताइवान का घटता राजनयिक स्थान (15 अक्टूबर)
3	डॉ. प्रियंका पंडित	70 वर्ष बाद चीन की सरकार के स्वामित्व वाला उद्यम सुधार किस ओर बढ़ रहा है (22 अक्टूबर)
4	डॉ. अन्वेषा घोष	अफगानिस्तान में चीन के बढ़ते प्रभाव और शांति प्रक्रिया के लिए इसके निहितार्थ (26 नवंबर)
5	डॉ. सौरभ मिश्रा	प्रथम रूस-अफ्रीका शिखर सम्मेलन का राजनीतिक मकसद (28 नवंबर)
6	डॉ. तेम्जेनमरेन आओ	भारत-आसियान आर्थिक जुड़ाव: आरसीईपी से परे देखना और राष्ट्रपति की फिलीपींस की यात्रा के बाद की कार्रवाई (3 दिसंबर)
7	डॉ. स्तुति बनर्जी	चिली में अशांति (6 दिसंबर)
8	डॉ. स्तुति बनर्जी	अर्जेंटीना चुनाव: अल्बर्टो फर्नांडीज की अध्यक्षता (कार्यभार) से उम्मीदें (6 दिसंबर)
9	डॉ. दीपिका सारस्वत	इराक में सरकार विरोधी प्रदर्शन और सद्दाम राज्य के टर्मिनल संकट (12 दिसंबर)
10	डॉ. प्रियंका पंडित	भारत का आरसीईपी समझौता: वरदान या अभिशाप? (16 दिसंबर)
11	डॉ. स्तुति बनर्जी	कोस्टा रिका: सेना के बिना एक राष्ट्र के 71 वर्ष (27 दिसंबर)
संक्षिप्त मुद्दे		
1	डॉ. प्रियंका पंडित	विश्व व्यापार संगठन में षविकासशील देशष का दर्जा खोना: भारत और चीन की प्रतिक्रियाएँ (10 अक्टूबर)
2	डॉ. गुंजन सिंह	2019 में झिंजियांग पर तीन सफेद पत्रों की कथा (11 अक्टूबर)
3	डॉ. दीपिका सारस्वत तथा तरंग जैन	फारस की खाड़ी में एक नई सुरक्षा वास्तुकला का समय: अमेरिकी, ईरानी और रूसी सुरक्षा दर्शन को समझना (31 अक्टूबर)
4	डॉ. स्तुति बनर्जी	द्वीप राष्ट्रों तक भारत की पहुँच: कैरीकॉम और फिपिक के साथ शिखर सम्मेलन (01 नवंबर)

5	डॉ. चंद्र रेखा	रूसी सुदूर पूर्व: भारत का दृष्टिकोण और चीनी पदचिन्ह का विस्तार (13 नवंबर)
6	डॉ आशीष शुक्ला	करतारपुर साहिब कॉरिडोर: भारत-पाकिस्तान संबंधों में सिल्वर लाइनिंग? (20 नवंबर)
7	डॉ. तेम्जेनमरेन आओ	राष्ट्रपति जोकोवी के दूसरे कार्यकाल पर (03 दिसंबर)
8	डॉ. स्तुति बनर्जी	कनाडा चुनाव और प्रधानमंत्री ट्रूडो (11 दिसंबर)
9	डॉ. अंकिता दत्ता	भारत और यूरोपीय संघ के बीच जलवायु परिवर्तन सहयोग: एक समीक्षा (17 दिसंबर)
10	कस्तूरी मिश्रा	येमेनी संघर्ष - अंत की शुरुआत? (19 दिसंबर)
11	डॉ. विवेक मिश्रा	इंडो-पैसिफिक का विकास: बढ़ता रूसी दांव (23 दिसंबर)
12	डॉ. रश्मिनी कोपरकर	'डस्टलिक': भारत-उज्बेकिस्तान सुरक्षा साझेदारी में एक कदम आगे (24 दिसंबर)
13	डॉ. समता मल्लेम्पति	श्रीलंका में 2019 के राष्ट्रपति चुनाव: भारत-श्रीलंका संबंधों के लिए अवसर और चुनौतियाँ (27 दिसंबर)
नीति संक्षेप		
1	आकाश वर्मा	अफगान शांति प्रक्रिया: ट्रंप की नीति में तालिबान (4 अक्टूबर)

इंडिया क्वार्टली:
अंतर्राष्ट्रीय मामलों की एक पत्रिका
संस्करण 75, अंक 4,
अक्टूबर-दिसम्बर 2019

आईसीडब्ल्यूए के बारे में

विश्व मामलों की भारतीय परिषद (आईसीडब्ल्यूए) भारत की सबसे पुरानी विदेश नीति थिंक टैंक है, जिसके पास विदेश और सुरक्षा नीतिगत मुद्दों में विशेषज्ञता है। यह भारत के प्रथम प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू की प्रेरणा से प्रख्यात बुद्धिजीवियों के एक समूह द्वारा भारत की स्वतंत्रता से पहले 1943 में स्थापित किया गया। विश्व मामलों की भारतीय परिषद को संसद के एक अधिनियम द्वारा 2001 में ष्राष्ट्रीय महत्व का संस्थानष घोषित किया गया है।

परिषद अपने आंतरिक संकाय सदस्यों के साथ-साथ बाहरी विशेषज्ञों के माध्यम से नीति अनुसंधान का संचालन करती है। यह सम्मेलनों, संगोष्ठियों, गोलमेज चर्चाओं, व्याख्यानों और प्रकाशनों सहित नियमित रूप से बौद्धिक गतिविधियों की एक श्रृंखला का आयोजन करता है। यह महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में एक सुव्यवस्थित पुस्तकालय, वेबसाइट तथा ''इंडिया क्वार्टरली'' नामक पत्रिका का अनुरक्षण करता है। यह अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भारत की भूमिका, और सरकार तथा सिविल सोसाइटी नीति मॉडल और रणनीतियों के बारे में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने में जुटा हुआ है, और बहु-स्तरीय संवाद व अन्य विदेशी थिंक टैंक्स के साथ बातचीत के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है।

न्यूजलेटर आईसीडब्ल्यूए, सप्रू हाउस, बाराखंभा रोड, नई दिल्ली - 110001 द्वारा प्रकाशित
वेबसाइट: http://www.icwa.in; दूरभाष संख्या 011-23317246 फैक्स नंबर 011-23310638

परामर्शदाता
डॉ. टी.सी.ए. राघवन, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए, सप्रू हाउस, नई दिल्ली।

संपादक
श्रीमती नूतन कपूर महावर, सयुक्त सचिव, आईसीडब्ल्यूए

प्रबंध संपादक
डॉ. निवेदिता रे, निदेशक अनुसंधान, आईसीडब्ल्यूए

सहायक संपादक
डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्जी, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए